इतिहास और कल्पना का समन्वित चिन्तन है 'उर्वशी'

डॉ. हरीश अरोड़ा

हिन्दी विभाग
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
drharisharora@gmail.com

शोध सार

इतिहास और पुराण के माध्यम से अनेक रचनाएं साहित्य में नवीन जीवन चेतना को उद्धृत करती हैं। इनमें पुराख्यानों को नवीन प्रतीकों के माध्यम से आधुनिक समाज की चेतना से सम्बद्ध किया गया है। 'उर्वशी' महाकाव्य में उर्वशी और पुरूरवा के प्रेम का जो आख्यान है वह कथा वेदों में भी इन्हें ऋषि और देवता का प्रतिरूप स्वीकार किया गया है लेकिन दिनकर इन्हें सनातन नर और सनातन नारी के प्रतीक द्वारा भारत के तात्कालिक परिवेश के अनुरूप नव्यता प्रदान करते हैं। इस कृति में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा अरविन्द का प्रभाव भी स्पष्ट लक्षित होता है। इसमें इतिहास और कल्पना के अद्‌भुत समन्वय द्वारा नई चेतना को उद्धृत किया गया है।

बीज शब्द *: कामाध्यात्मक, आख्यान, निरुक्त।*

रामधारी सिंह 'दिनकर' की काव्य साधना की परम उपलब्धि 'उर्वशी' है। हिन्दी काव्य–जगत में 'कामायनी' के पश्चात् यदि किसी महाकाव्यात्मक कृति ने युग को महान सन्देश दिया है तो वह है 'उर्वशी'। यह दिनकर की काव्य यात्रा की सबसे प्रौढ़ रचना है लेकिन प्रौढ़ता के बावजूद इसमें सौकुमार्य है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में कहें तो – ''**..... इसका मूल प्रतिपादन गीतिकाव्यात्मक है, बहुत कुछ ताजमहल की भांति–गठन में महाकाव्यात्मक परन्तु मूलतः गीतिकाव्य के प्राणस्वरूप सुकुमार भावों पर आश्रित।**''[1] जीवन के जिन सन्दर्भों को लेकर दिनकर न 'उर्वशी' की रचना की वे 'कामायनी' के समान भले ही विराट न हों किन्तु उनकी गम्भीरता और मोहकता के बारे में कोई सन्देह नहीं। यह कृति कामाध्यात्म का ऐसा दार्शनिक रूप प्रस्तुत करती है जिसमें आधुनिक मानव के जीवन के प्रेम और काम की गहरी जीवन सृष्टि का साक्षात्कार होता है। दिनकर की यह कृति

सही मायनों में 'अन्तर्जगत के निगूढ़ चिन्तन के मन्थन से निकला हुआ नवनीत' है।

उर्वशी और पुरूरवा का प्रेमाख्यान अत्यन्त प्राचीन है। यह आख्यान सर्वप्रथम वेदों में अनेक स्थलों पर मिलता है। वेदों में शब्द और अर्थ की विवेचना करने वाला प्रसिद्ध ग्रंथ 'निरुक्त' वैदिक आख्यानों को प्रतीकात्मक मानने का पक्षधर रहा है। किन्तु भारतीय कवियों ने वेदों के अन्तर्गत आने वाली कथाओं को लोक–जीवन की धारा में आबद्ध करते हुए ही ग्रहण किया है। आधुनिक काव्य जगत में हिन्दी के अनेक कवियों ने इन आख्यानों में पुनः प्रतीकात्मकता द्वारा नवीन अर्थ ग्रहण की सम्भावना को तो पुनर्जीवित किया ही साथ ही इनमें आध्यात्मिकता स्वरूप की तलाश भी की। इस भावना की प्रतिष्ठा करने वालों में जयशंकर प्रसाद और रामधारी सिंह 'दिनकर' का नाम लिया जा सकता है। जहाँ प्रसाद 'कामायनी' के माध्यम से प्रस्तुत के साथ–साथ अप्रस्तुत पक्ष को अधिक गम्भीरता से स्थान देते हैं वहीं दिनकर रहस्यदर्शी बनने की बजाए कवि ही अधिक बने रहे लेकिन उनके काव्य में भी रूपकता का निर्वाह स्वतः ही सशक्त रूप में हो उठता है।

'उर्वशी' के मूलाधार के सम्बन्ध में कहा जाए तो इसकी कथा के आरम्भिक सूत्र वेदों में मिलते हैं। ऋग्वेद में पुरूरवा और उर्वशी को ऋषि और देवता के रूप में स्थान देते हुए स्त्रियों के प्रेम को अस्थायी कहा गया है–

पुरूरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वात इवाहमस्मि
इषुर्न श्रिय इषुधे रसना गोपाः शतसा न रंहिः।[2]

शुक्ल यजुर्वेद में एक स्थान पर उपमान रूप में उर्वशी, पुरूरवा और आयु तीनों का ही नामोल्लेख हुआ है–

अग्नेजंनित्रमसि वृषणों स्थ उर्वश्यस्यायुरसि
पुरूरवा असि।[3]

निरूक्त में पुरूरवा को एक ऐसा देवता कहा गया है जिसे असुरों से यु(के समय देवता आगे करके चलते हैं और वह उर्वशी से दीर्घ 'आयु' प्राप्त करता है। निरूक्तकार ने पुरूरवा को 'प्राण', उर्वशी को 'इड़ा' तथा आयु को 'वायु' का पर्याय भी स्वीकार किया है।

दिनकर ने अपने प्रबन्ध काव्य 'उर्वशी' में भले ही वैदिक कालीन कथा को आधार बनाया हो लेकिन भावात्मकता की दृष्टि से उनके काव्य में उर्वशी 'नारी' के रूप में तथा पुरूरवा 'पुरुष' के रूप में ही दृष्टिगत होते हैं। कवि ने अपने काव्य 'उर्वशी' की भूमिका में स्पष्ट भी किया है – ''**इस कथा को लेने में वैदिक आख्यान की पुनरावृत्ति अथवा वैदिक भसंग का प्रत्यार्वन मेरा ध्येय नहीं रहा। मेरी दृष्टि में पुरूरवा सनातन नर का प्रतीक है और उर्वशी सनातन नारी का।**''[4]

'उर्वशी' की भूमिका में दिनकर ने स्वयं स्वीकार किया है कि उनकी इस कथा के आधार ऋग्वेद, पुराण, देवी भागवत आदि हैं। उन्होनें अपनी एक भेंटवार्ता में रवीन्द्रनाथ ठाकुर और योगीराज अरविन्द के प्रभाव का भी संकेत किया है – **''उर्वशी काव्य में एक स्थल पर रवीन्द्रनाथ**

की 'पतिता' कविता की छाया पड़ी है ..... उनकी उर्वशी स्फुट काव्य है और उसकी तुलना मेरी उर्वशी के केवल एक उद्‌गार से की जा सकती है। ..... अरविन्द ने उर्वशी को रहस्यवादी भावनाओं में लपेट दिया है। वह शायद मनुष्य के आध्यात्मिक आदर्श का प्रतिरूप है, जिसके संधान में मनुष्य संसार के वैभवों का त्याग कर देता है। मैंने पुरूरवा का जो संन्यास दिखलाया है, उसके भीतर भी ऐसा कोई संकेत है।''[5]

ऋग्वेद के अतिरिक्त शतपथ ब्राह्मण में भी उर्वशी और पुरूरवा का आख्यान विस्तार से मिलता है। इसके अनुसार पुरूरवा एक राजा थे और उर्वशी अप्सरा। दोनों के प्रगाढ़ प्रेम में उर्वशी ने राजा के समक्ष तीन बार आलिंगन की शर्त रखी। एक शर्त के भंग हो जाने पर वह अन्तर्धान हो गयी जिससे राजा को वियोग होता है।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में पुरूरवा के जन्म की कथा आई है जिससे उसे ऐलवंशीय बताया गया है। महाभारत के 'आदिपर्व' के एक प्रसंग में पुरूरवा और उर्वशी उपमान में आए हैं। 'देवी भागवत' के आख्यान का प्रभाव 'दिनकर' ने स्वयं स्वीकार किया है। इसके प्रथम स्कन्ध के तेरहवें अध्याय में दैत्य द्वारा अपनी रक्षा के पफलस्वरूप उर्वशी पुरूरवा के भवन में चलने की स्वीकृति देती है किन्तु उससे तीन शर्तें करवा लेती है जिसमें तीसरी शर्त के अनुसार विलास–काल के अतिरिक्त अन्य किसी समय राजा को उसके सम्मुख नग्नावस्था में आने का निषेध था। लेकिन देवदूतों के षडयंत्र से यह तीसरी शर्त टूट जाती है और उर्वशी राजा को छोड़ देवलोक चली जाती है।

'पद्‌मपुराण' में उर्वशी का आख्यान थोड़ा भिन्न है। एक दिन देवलोक में भरत मुनि के निर्देशन में एक नाटक खेला जाता है। पुरूरवा के प्रेम में खोई उर्वशी अभिनय करते समय नायक के नाम के स्थान पर पुरूरवा का नाम ले बैठती है। इससे कूपित होकर भरत मुनि उसे मृत्युलोक वास का शाप देते हैं लेकिन साथ ही उसकी अवधि निश्चित करते हुए कहते हैं कि जब तक वह अपने पुत्र को नहीं देखेगी तभी तक वह धरती पर रहेगी। एक दिन एक वनवासिनी राजा की सभा में एक कुमार के साथ आकर उसे राजा का पुत्र बताती है। उसी समय उर्वशी शापमुक्त होकर देवलोक चली जाती है और राजा वियोग में स्वयं वन चला जाता है।

कालिदास ने अपने 'विक्रमोर्वशीय' आख्यान को नूतन रूप दिया है। 'पद्‌मपुराण' की कथा के आरम्भिक रूप में यह कथा बढ़ती है। जब उर्वशी भरतमुनि द्वारा शापित होकर धरती पर आती है तब वह पुरूरवा के साथ अपना सुखी जीवन व्यतीत करती है। एक दिन मंदाकिनी नदी के किनारे राजा एक विद्याधर–कन्या को बद्धदृष्टि से देखते हैं जिससे रुष्ट होकर उर्वशी कार्त्तिकेय के गन्धमादन उद्यान में चली जाती है जहाँ स्त्री–प्रवेश वर्जित था। वहाँ पहुँचते ही उर्वशी शाप के कारण 'लता' बन जाती है। राजा व्याकुल होकर उसे खोजते हैं। वियोगावस्था में आकाशवाणी द्वारा उर्वशी के मिलन का संदेश

मिलता है जिसके द्वारा राजा उर्वशी को प्राप्त करता है। एक दिन एक तपस्विनी राजसभा में एक कुमार को उनका पुत्र घोषित करती है जिससे उर्वशी शापमुक्त हो देवलोक लौट जाती है। राजा वियोग में वनवासी होने का निश्चय करता है। उसी क्षण देवर्षि नारद राजा को यह समाचार सुनाते हैं कि इन्द्र के आदेश पर उर्वशी आजीवन आप की सहचरी बनी रहेगी।

'कथासरित्सागर' का आख्यान अन्य आख्यानों की अपेक्षा काल्पनिक और काव्यात्मक अधिक है। विष्णु भक्त राजा पुरूरवा की उर्वशी प्रेम की व्यथा जानकर भगवान विष्णु इन्द्र को आदेश देते हैं कि वे उर्वशी को पुरूरवा के पास भेज दें। इसके पश्चात् देवासुर संग्राम में राजा मायाधर नामक प्रमुख असुर को मार देता है जिससे उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। विजय के उपलक्ष में आयोजित उत्सव में रम्भा के नृत्य पर राजा हँस पड़ता है जिससे कूपित होकर नृत्याचार्य तुम्बुर उसे उर्वशी के वियोग का शाप देते हैं और कहते हैं भग्वद्धन द्वारा ही वह शाप दूर हो पाएगा। कुछ दिनों बाद गंधर्वों की एक टोली उर्वशी को उठा ले जाती है। राजा व्यथित होकर बदरिकाश्रम चला जाता है। वहाँ भगवान की आराधना से शाप–मुक्त होकर उर्वशी उसे मिल जाती है।

दिनकर कृत 'उर्वशी' की कथा को देखा जाए तो कवि ने प्रायः प्रत्येक अंक की कथा में कालिदास के 'विक्रमोर्वशीयम्' की कथा को सहारा लिया है। उसके पात्र निपुणिका, औशीनरी, कंचुकी तक को कवि ने अपने काव्य में यथावत् रूप में उठा लिया है। इनके अतिरिक्त सहजन्या, रंभा, मेनका, चित्रलेखा आदि पात्रों को भी कवि ने कालिदास से स्वीकार किया है। इनका उल्लेख वेदों में नहीं मिलता। कालिदास के 'विक्रमोर्वशीयम्' में कई प्रसंग ऐसे हैं जिन्हें कवि ने बिना किसी उपेक्षा के अपनी कथा में स्थान दिया है जिनमें मुख्यतः रानी का व्रतविन्यास, चित्रलेखा का छिपकर रनिवास का हाल जानना, गन्धमादन पर्वत पर एक वर्ष तक जाकर काम पूर्ति के वर्णन हैं। वैसे पुराणों और महाभारत में भी कई प्रसंग ऐसे हैं जिन्हें पहले कालिदास ने और उसके माध्यम से दिनकर ने अपने काव्य का सहारा बनाया। भागवत् में सुकन्या और च्यवन के मिलन की कथा को भी कवि दिनकर ने 'उर्वशी' में स्थान दिया है। गन्धमादन पर्वत की चर्चा महाभारत, ब्रह्मपुराण और मार्कण्डेय पुराण में भी आई है।

उपरोक्त कथाओं के आधार पर देखा जाए तो 'उर्वशी' की कथा का घटना, स्थान और पात्र इन तीनों ही दृष्टियों से ऐतिहासिक आधार स्पष्ट होता है। निश्चित रूप से कवि ने अपनी कल्पना और मौलिकता के आश्रय द्वारा इस कृति को साहित्यिक रूप प्रदान किया है।

संदर्भ

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, पृष्ठ 51

2. ऋग्वेद, सूक्त 95/2, टीकाकार डॉ. गंगा सहाय शर्मा, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012, पृष्ठ 1740
3. यजुर्वेद, 5/2, टीकाकार डॉ. रेखा व्यास, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1979, पृष्ठ 64
4. रामधारी सिंह दिनकर, 'भूमिका', उर्वशी, उदयाचल, पटना, संस्करण 1971, पृष्ठ ख
5. दिनकर ;भेंटवार्ताद्ध, सं. सावित्री सिन्हा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1967, पृष्ठ 138

Copyright © 2014. Dr. Harish Arora. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.